

विषय सूची

पुरोवाक्— प्रो. डा. राधावल्लभत्रिपाठी, कुलपति रा. सं. सं. नवदेहली	iii-iv
संपादकीय वक्तव्य— प्रो. डा. संघसेन सिंह, पूर्व-आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	v-x
अनुवादक-परिचय (सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री)	xi-xiii
दो शब्द—पं० डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	xv-xix
चित्र परिचय	xvi
उत्सर्ग	xvii
विषयसूची	xix-xxiii
भूमिका	1-72

प्रथम परिच्छेद

1. बोधिचित्तानुशंसा (श्लोक 1-36) 73-81
मंगलाचरण 1; ग्रन्थ प्रयोजन 2, 3; क्षण-संपत्ति की दुर्लभता 4, 5
सामान्य रूप में बोधिचित्तमहिमा 6-14; बोधिचित्त के दो भेद, बोधि-
प्रणिधिचित्त और बोधिप्रस्थानचित्त 15; बोधिप्रणिधिचित्त और
बोधिप्रस्थानचित्त में भेद 16; विशेष रूप में बोधिचित्तमहिमा 17-27;
लोकस्वभाव 28; बोधिसत्त्वमाहात्म्य 29-33; बोधिसत्त्व के वैरी की
गति 34; बोधिसत्त्व के हितैषी की गति 35; नमस्करणीय शरीर 36।

द्वितीय परिच्छेद

2. पापदेशना (श्लोक 1-66)

82-94
वन्दना—मानसिक पूजा 1-9; स्नानपूजा 10-11; वस्त्र-पूजा 12, 13;
गंधपूजा 14; माल्यपूजा 15; धूपपूजा 16 पूर्वार्ध; नैवेद्य पूजा 16
उत्तरार्ध; दीपपूजा 17 पूर्वार्ध; पुष्पपूजा 17 उत्तरार्ध; विमान-पूजा 18;
छत्रपूजा 19; गीतवाद्यपूजा 20-23; प्रणामपूजा 24, 25; त्रिशरणगमन
26; पापदेशना 27-66।

तृतीय परिच्छेद

3. बोधिचित्त-परिग्रह (श्लोक 1-33)

95-100
पुण्यानुमोदना 1-3; अध्येषणा (प्रार्थना) 4; याचना 5; परिणामना 6-
9; उत्सर्ग 10-21; बोधिचित्तोत्पाद 22-33।

चतुर्थ परिच्छेद

4. बोधिचित्ताप्रमाद (श्लोक 1-48)

101-109
बोधिब्रती का परहिताचरण परम कर्तव्य 1-3; बोधिब्रती के लिए
प्रतिज्ञाभंग में दोष 4-11; बोधिब्रती का हृदयमन्थन 12-48।

पंचम परिच्छेद

5. संप्रजन्य-रक्षण (श्लोक 1-109)

110-128
चित्तरक्षा 1-3; चित्त की प्रधानता 4-6; नरक—चित्त की कल्पनामात्र
7, 8; दानपारमिता—चित्त की उत्सर्गवृत्ति 9, 10; शीलपारमिता—
चित्त की विरतिवृत्ति 11; विश्वविजय—चित्तविजयमात्र 12;
सर्वनिवृत्ति—चित्तनिवृत्ति 13, 14; ब्रह्मत्व—चित्तवृत्तिविशेषमात्र 15;
धर्मकर्म की चित्तनिर्भरता 16-18; चित्तरक्षा—परम कर्तव्य 19-22;
स्मृति-संप्रजन्य रक्षा 23; असंप्रजन्य दोष 24-28; स्मृतिरक्षा के साधन

29-32; संप्रजन्य की स्थिरता का उपाय 33; कायप्रत्यवेक्षा 34-39;
चित्तप्रत्यवेक्षा 40-45; अनाचरणीय 43; पुनः चित्तप्रत्यवेक्षा 47-58;
पुनः कायप्रत्यवेक्षा 59-70; आचरणीय और अनाचरणीय 71-107;
संप्रजन्य लक्षण 108; आचार की प्रधानता 109।

षष्ठ परिच्छेद

6. क्षान्ति-पारमिता (श्लोक 1-134) 129-153

क्रोधनिन्दा 1-10; दुःख में असहिष्णुता अनुचित 11-20; दुःख-
माहात्म्य 21; दुःखदायक के प्रति सहिष्णुता उचित 22-34; आत्मपीडक
जगत् के प्रति दया उचित 35-41; दुःख में दुःखदायक के प्रति
भावना 6। 42-51; निन्दा, कठोरवचन और अपकीर्ति में चित्तक्षोभ
अनुचित 52, 53; लाभ-हानि में क्रोध अनुचित 54-61; निन्दक के
प्रति क्षमा 62-66; अपराधी के प्रति क्षमा 67-69; क्रोधदमन परम
कर्तव्य 70-72; क्रोध दुःखहेतु 73, 74; क्षमा दुःख की कल्याणमयता
75; परकीय प्रीतिसुख को अपना प्रीतिसुख मानना 76-82; अन्यसंपत्ति
में प्रसन्नता 83-85; पुण्यात्माओं से चढ़ाबढ़ी न करना चाहिए 86; शत्रु
का भी अप्रिय न चाहना 87-89; मनुष्य का सच्चा स्वार्थ 90-91;
स्तुतिविघात में क्रोध अनुचित 92-101; अपकारी एवं पुण्यविघ्नकारी
के प्रति क्षमा 102-111; सत्त्वक्षेत्र तथा बोधिक्षेत्र की समता 112-
116 पूर्वार्ध; सत्त्वक्षेत्र और बुद्धक्षेत्र में भेद 116 उत्तरार्ध—118;
सत्त्वाराधन ही बुद्धाराधन है 119-127; दुर्बल अपराधी के प्रति भी
क्षमा 128-132; सत्त्वाराधन का फल 133; क्षमाफल 134।

सप्तम परिच्छेद

7. वीर्य-पारमिता (श्लोक 1-75) 154-168

वीर्यमहिमा 1; वीर्य और उसके विपक्ष 2; आलस्यहेतु 3; संवेगभावना
4-15; वीर्यवृद्धि के साधन 16; अविषादोत्पादभावना 17-30; बल

व्यूह 31; बलव्यापार 32; छन्दबल 33-46 पूर्वार्ध; मान (चित्तदृढता) बल 46 उत्तरार्ध—61; रतिबल 62-65; त्यागबल 66; तात्पर्य (तत्परता) 67-73; वशिता (आत्मविधेयता) 74, 75।

अष्टम परिच्छेद

8. ध्यान-पारमिता (श्लोक 1-186) 169-202
समाधिभावना की सप्रयोजनता 1; कायचित्तविवेक 2; कायविवेक के साधन; लोकसंपर्कपरित्याग 3-8; बाल (मूर्ख) संग-परिहार 9-25; विवेक (एकान्तवास) 26-28; चित्तविवेक के साधन : कामासंगपरिहार 39-79; संवेगकथा 80-85; विवेकवासानुशंसा 86-89; परात्मसमता 90-110; परात्मपरिवर्तन 111-165; आत्मदमन (चित्तदमन) 166-173; कायदमन 174-184; पंडितानुसरण 185; समाधि का ध्येय आवरणनाश 186।

नवम परिच्छेद

9. प्रज्ञापारमिता (श्लोक 1-168) 203-249
दुःखनिवृत्ति का उपाय : प्रज्ञा; दो सत्य : व्यवहार सत्य और परमार्थसत्य 2; दो प्रकार के लोग : साधारण और रहस्यवादी 3; बाह्य जगत् की मायामयता 4-8; सर्वास्तिवादियों के आक्षेप और उनका समाधान 9-15 पूर्वार्ध; विज्ञानवादियों के आक्षेप और उनका समाधान 15, उत्तरार्ध—35; शून्यवाद में बुद्धपूजा का फल 36-40; आगम प्रामाण्य 41-48; शून्यता की सप्रयोजनता 49-56; अहंकार का विषय—(1) शरीर अहंकार का विषय नहीं 57-60; (2) ज्ञान अर्थात् चेतन अहंकार का विषय नहीं 61-68; अचेतन अहंकार का विषय नहीं 69-73; विज्ञानवादियों के अनुसार चित्त को परमार्थ सत् मानने पर भी वह अहंकार का विषय नहीं हो सकता 74-78; कायस्मृत्युपस्थान 79, 80; प्रसंगवश अवयवी की समीक्षा 81-85; प्रसंगवश परमाणुओं की

समीक्षा 86-88; वेदनास्मृत्युपस्थान 89-102; चित्तस्मृत्युपस्थान और धर्मस्मृत्युपस्थान 103-106; संवृत्तिसत्य की भ्रममात्रता 107-116; अजातिवाद का स्थापन तथा अजातिवाद के प्रतिपक्षी दर्शनों की आलोचना—स्वभाववाद पर विचार 117, 118; ईश्वरवाद की आलोचना 119-126; परमाणुवाद की आलोचना 127 पूर्वार्ध; प्रकृतिवाद की आलोचना 127 उत्तरार्ध—142 पूर्वार्ध; हेतुवाद की आलोचना 142 उत्तरार्ध—151; शून्यवाद का उपसंहार 152-168 ।

दशम परिच्छेद

10. बोधि-परिणामना (श्लोक 1-58) 250-260
- सबके लिए बोधिचर्या की प्रार्थना 1; सबके लिए सुख एवं बोधिसत्त्व सुख की प्रार्थना 2, 3; नारकीय जीवों के सुख की प्रार्थना 4-15; दुर्गति प्राप्त प्राणियों के लिए सुख की प्रार्थना 16; प्रेत और तिर्यग् योनिगत जीवों के लिए सुख की प्रार्थना 17, 18; मनुष्य योनिगत प्राणियों के लिए सुख की प्रार्थना 19-29; स्त्रियों के लिए विशेष प्रार्थना 30; सब प्राणियों के लिए शुभ की प्रार्थना 31-33; विविध हित प्रार्थनाएं 34-46; सबके लिए बुद्धत्व प्राप्ति की प्रार्थना 47; बुद्ध, बोधिसत्त्व और प्रत्येक बुद्धों के लिए पूजादि की प्रार्थना 48-50; अपने लिए विविध प्रार्थनाएं 51-56; संघ के लाभ-सत्कार की प्रार्थना 57; ग्रन्थान्त मंगलाचरण 58 ॥
- ग्रन्थपंजी (Bibliography) 261-262
- परिशिष्ट (1) प्रकाशकीय वक्तव्य—भदन्त ग० प्रज्ञानन्द 263-266
- (2) बुद्धकाय 267-273
- (3) बुद्धवचन 274-278
- श्लोकानुक्रमणी 279-296
- अनुक्रमणी 297-316